12–7–67रात्रीक्लास– लड़ाई के मैदान में मनुष्य को खबरदार बहुत रहना पड़ता है। सूक्ष्म हो वा स्थूल हो। बाबा ने समझाया है कि तुम्हारी लड़ाई है साइंस से। साइलेंस और साइंस। साइंस से विनाश और साइलेंस से स्थापना होती है। तुम गुप्त सेना हो ना। हर एक .....को आत्मा समझें। देही अभिमानी। जात–पात का अभिमान भी निकल जाता है। कोई भी धर्म ,कोई भी जात वाला हो वो भेद नहीं रह सकता है। देह का अभिमान छोड़कर अपने को आत्मा समझना है। जबकि बेहद के बाप की तुम बेहद की ही ईश्वरी सन्तान हो तो तुमको शुद्ध अहंकार होना चाहिए कि हम ईश्वर की संतान हैं। ईश्वरीय कुल के भी तो ब्राह्मण कुल के भी हो। जबकि ब्राह्मण कुल के (हो)तो दूसरे जात–पात का भेद नहीं रहता है। यहां तो हर प्रकार के बच्चे आते हैं। कोई गरीब,कोई साहुकार, अच्छी2 पोजीशन वाले भी आते हैं। बाबा को तो सम्भाल से चलाना होता है ना। तुम्हारे सुख के लिए मददगार बनते हैं। शिवबाबा पास देते हैं ,शिवबाबा तुम बच्चों के काम में लगाते हैं। मकान आदि बनवाते हैं। समझो कि जिसने मकान बनवाया है तो वो आता है तो जरूर उसकी वैसी ही जगह पर रखना पड़ेगा। दूसरे कोई से बदली करवाना

12–7–67

–

पड़ेगा ना। इसमें फिर खयाल नहीं आना चाहिए कि साहुकारों का मान रखते हैं। कब2 तो बिगड़ भी पड़ते हैं। बाबा तो समझते हैं कि ऐसे खयाल कब नहीं करना चाहिए। बाबा जानते हैं कि किनसे बच्चों के लिए कैसे काम निकालना है। बाप है ना। यह भी जानते हो कि घर में सन्यासी को वा बड़े आदमी को मंगावेंगे तो उनकी खातिरी करेंगे ना। यहां बाप ही रमजबाज है। बच्चों को कब संशय नहीं आना चाहिए। श्रीमत हर बात में कल्याणकारी है। बाबा तो कब कोई को दो/तीन हजार की सौगात भी दे देंगे। कोई को 5/10 की देंगे। बाबा समझते हैं कि यह भारत की सेवा में मददगार बनेंगे। बाप है ही भारत के लिए खास। भारत को ही जीवनमुक्ति में और बाकियों को मुक्ति में ले जावेंगे। कहेंगे बाबा ऐसे क्यों करते हो?भारत में आकर उनको स्वर्गवासी बनाते हो,हमको क्यों नहीं बनाते हो?यह बाप में कब भी आना नही चाहिए। बाप है ही कल्याणकारी।ऐसे2 कब खयाल आना नहीं चाहिए। ब्राह्मणी भी जानती है कि अच्छे2 मददगार को आदर जरूर देना है। बच्चों की ही सम्भाल होती है। बहुत बच्चे आये तो कैसे रहना पड़ा। कोई को तो गद्दे भी देने पड़े। कब तो गलीचा आदि डालकर भी टिपटॉप करते हैं। उनको जो कल्याण हो जावेगा तो बहुतों का कल्याण हो जावेगा। कब संशय दिल में नहीं लाना चाहिए। ब्राह्मणियों में भी सभी नम्बरवार हैं। कोई को पुचकार देंगे। बहुत प्यार करेंगे। अच्छी सर्विस ना करती हैं तो सावधानी देंगे कि तुम्हारी मेरे पास यह रिपोर्ट है। बाबा सबको लिख देते हैं ब्राह्मणी का देहअभिमान आदि कहीं पर भी देखो तो बाबा को फट लिखकर भेजो। तो फिर बदली कर देंगे। शिवबाबा के साथ2 यह बाबा भी तो अनुभवी है ना। यह भी मेहमानों की खातिरी बहुत अच्छी रीति करते थे। बच्चों से भी जास्ती करते थे। ऐसे खयाल कब नहीं करना कि भगवान होकर भी एकरस क्यों नहीं चलते हैं?बाबा को तो सब (खयाल)रखना होता है। तुम बच्चे सतोप्रधान बनते हो तो सामिग्री भी सारी फर्स्टक्लास हो जाती है। यहां क्या है यह दुनियां में कोई भी कुछ जानते नहीं हैं। भक्तिमार्ग में तो माथा ही ठोकते रहते हैं। यहां पर वो भी कोई बात नहीं है। बाप के सिकीलधे बच्चे हो। कब कोई बड़ा दिल होता है तो पांव पड़ा जाता है। वहां पर जो है वो यहां पर नहीं होता है। यह तो बाप,टीचर,गुरू भी है। बार2 तब तो नमस्ते ही करते रहना पड़े। तुम कहेंगे बाबा नमस्ते। तो बाबा भी कहेंगे नमस्ते2 । उत्तर तो जरूर ही देना होता है ना। तुम बच्चे गुप्त हो। (एवरी थिंग) गुप्त हो। शिवबाबा को कोई दान नहीं देते हैं। स्वर्ग में तो जो फिर इतना मिलता है तो वो लेना हुआ वा देना हुआ?भक्तिमार्ग में ईश्वर अर्थ करने आते थे तो ईश्वर बहुत थोड़ा देते थे। अब तो देते हैं 21जन्मों के लिए। बाप गरीब निवाज है ना। लेंगे फिर वो क्या। वो तो भारत को साहुकार बनाते हैं फिर क्या, बात ही मत पूछो। यह भी तुम समझते हो। बेहद का

बाप आते हैं। आकर स्वर्ग बनाते हैं। स्वर्ग यहां भारत में ही था। बाप ने बनाया था। सीढ़ी पर समझाना बहुत सहज है। बच्चों को कब भी एक/दो में खयाल नहीं आना चाहिए। ब्राह्मणी भी ढंग से चलती है। समय2 पर खातिरी करते हैं तो फिर दिल में नहीं आना चाहिए। भलू–चूक से अगर कोई कुछ कह भी देती है तो एक कान से सुनकर दूसरे से निकाल देना होता है। जिससे तुमको दुःख फील हो वो सुनकर निकाल देना चाहिए। सहनशील बनना चाहिए। हम तो जाते हैं अपने सुखधाम में। सहनशील भी गुण है। ज्ञान मार्ग में तो अपनी ही मस्ती में रहना चाहिए। हम तो वहां पर जाते हैं जहां कि दुःख की बात ही नहीं। मेरा बनकर अगर फिर पाप किया तो सौना दंड हो जावेगा। रोना आदि भी नहीं है। कोई मर गया तो क्या?दूसरा जाकर शरीर लेगा। उनको क्या याद करना?मनुष्य का शरीर कोई काम में नहीं आता है। जनावरों की तो हड्डिडयां भी काम में आती हैं। मनुष्य का मर्तबा तो सिर्फ जीते जी ही है। देवतायें भी पूजे जाते हैं तो आत्मायें भी। मगर मैं तो सिंगल पूज्य हूँ। कितनी अच्छी2 बातें हैं। कब भी (दूसरा)सिवाय बाप के समझा नहीं सके। विदाई